पाठ – साथी हाथ बढ़ाना

शब्दार्थ –

1. साथी - साथ देने वाला
2. हाथ बढ़ाना - मदद करना
3. बोझ - भारी वस्तु
4. मेहनत वाले - परिश्रमी
5. कदम बढ़ाना - आगे चलना
6. परबत - पर्वत
7. सीस - सिर
8. फ़ौलादी - लोहे की तरह मजबूत
9. सीना - छाती
10. चट्टान - बड़े पत्थर
11. पैदा कर दें राहें - रास्ता निकाल दें|
12. लेख की रेखा - भाग्य की रेखा
13. गैरों - परायों दूसरों(अंग्रेजों)
14. खातिर - के लिए
15. मंजिल - लक्ष्य
16. नेक - भलाई
17. दरिया - नदी
18. ज़र्रा - कण
19. सेहरा - रेगिस्तान
20. राई - सरसों

egyanarchive

कविता

साथी हाथ बढ़ाना, साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा मिल कर बोझ उठाना
साथी हाथ बढ़ाना.....
हम मेहनतवालों ने जब भी मिलकर क़दम बढ़ाया
सागर ने रस्ता छोड़ा पर्वत ने शीश झुकाया
फ़ौलादी हैं सीने अपने फ़ौलादी हैं बाँहें
हम चाहें तो पैदा कर दें, चट्टानों में राहें,
साथी हाथ बढ़ाना.....

मेहनत अपनी लेख की रेखा मेहनत से क्या डरना
कल ग़ैरों की ख़ातिर की अब अपनी ख़ातिर करना
अपना दुख भी एक है साथी अपना सुख भी एक
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल अपना रस्ता नेक,
साथी हाथ बढ़ाना.....

एक से एक मिले तो कतरा बन जाता है दरिया
एक से एक मिले तो ज़र्रा बन जाता है सेहरा
एक से एक मिले तो राई बन सकता है पर्वत
एक से एक मिले तो इन्सान बस में कर ले किस्मत,
साथी हाथ बढ़ाना.....

इस कविता से हमें ये संदेश मिलते हैं:

1. हमें प्रत्येक कार्य मिल-जुलकर करना चाहिए।
2. परिश्रम से कभी घबराना नहीं चाहिए।
3. सभी के सुख-दुख में सहयोग देना चाहिए।
4. यह कविता हमें एकता और संगठन की शक्ति के बारे में भी बताती है।

व्याख्या

१- एक अकेला थक जाएगा मिल कर बोझ उठाना ..... चट्टानों में राहें।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग-०१' के पाठ **'साथी हाथ बढ़ाना'** से लिया गया है इसके लेखक **साहिर लुधियानवी** हैं।

प्रसंग - कवि प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से लोगों को एक साथ मिल-जुलकर काम करने के लिए प्रेरित किया है।

व्याख्या - कवि इन पंक्तियों में कहते हैं कि एक अकेला व्यक्ति किसी बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्य करते हुए थक जाता है| वहीं सब के मिल-जुलकर कार्य करने पर उसी बड़े लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं और कोई थकता भी नहीं है। वे आगे कहते हैं कि हम परिश्रमी लोगों ने जब-जब भी एक साथ मिलकर काम किया है तब-तब समुद्र के समान विशाल और पहाड़ के सामान बड़ी रुकावटों को भी आसानी से पार कर लेते हैं। कवि कहते हैं कि हमारी बाहें और सीने फौलाद के सामान मजबूत हैं, अगर हम ठान लें तो अपने रास्ते की सभी कठिनाइयों को, मुसीबतों को दूर करने में सक्षम हैं।

अर्थात सभी के द्वारा साथ मिलकर काम करने पर हम आसानी से अपने बड़े से बड़े लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

egyanarchive

२- मेहनत अपनी लेख की रेखा..... बस में कर ले किस्मत।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग-०१' के पाठ **'साथी हाथ बढ़ाना'** से लिया गया है इसके लेखक **साहिर लुधियानवी** हैं।

प्रसंग - कवि प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से लोगों को मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है।

व्याख्या - कवि कहते हैं कि मेहनत तो हमारे लिए हमारे हाथ की रेखाओं के सामान हैं, मेहनत करने से किस प्रकार का डर। हमने अब तक दूसरों (अंग्रेजों) के लिए जी तोड़ मेहनत की है परंतु अब समय है कि हम वही मेहनत हमें अपना भविष्य बनाने के लिए करें। अब परिश्रम करने की बारी अपने लिए आई है। साथियों! हम सब के सुख और दुःख एक सामान हैं और हमारी मंजिल का रास्ता अच्छाई व सच का है। इसलिए साथियों! एक साथ मिलकर आगे बढ़ो (अर्थात् हम मेहनत करने वाले लोग हैं, कल तक हमारी मेहनत का फायदा दूसरे उठाते थे अब हमें आजाद भारत के निर्माण के लिए मिल-जुलकर काम करना है) और अपने सुख-दुःख के साथ सच्चाई व नेकी के रास्ते पर चलते हुए अपनी मंजिल को प्राप्त करेंगे।

३- एक से एक मिले तो..... अपने सपनों की तस्वीरें।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग-०१' के पाठ **'साथी हाथ बढ़ाना'** से लिया गया है इसके लेखक **साहिर लुधियानवी** हैं।

प्रसंग - कवि प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से एक-एक कण का महत्व बताया है।

व्याख्या - उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि जब एक-एक बूंद आपस में मिलती है तब विशाल समंदर बन जाता है। इसी प्रकार छोटे-छोटे अनेक बालू के कणों के मिल जाने से बड़े-बड़े रेगिस्तान बन जाते हैं। छोटे-छोटे राई के दाने एक साथ मिल जाने पर पर्वत बना देते हैं। यदि इसी तरह सभी मनुष्य एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करें तो अपने भाग्य को भी बदल सकते हैं। अर्थात एक साथ मिलकर काम करने से बड़े से बड़े लक्ष्य को भी प्राप्त किया जा सकता है।

egyanarchive

प्रश्न-अभ्यास

गीत से

प्रश्न 1. इस गीत की किन पंक्तियों को तुम आप अपने आसपास की जिंदगी में घटते हुए देख सकते हो?

उत्तर-

इस गीत की निम्नलिखित पंक्तियों को हम अपने आसपास की जिंदगी में घटते हुए देख सकते हैं-

साथी हाथ बढ़ाना

एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।

साथी हाथ बढ़ाना।

हम मेहनतवालों ने जब भी मिलकर कदम बढ़ाया।

सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया,

फ़ौलादी हैं सीने अपने, फ़ौलादी हैं बाँहें।
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें।

प्रश्न 2. 'सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया'-साहिर ने ऐसा क्यों कहा है? लिखो।

उत्तर-

साहिर ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि एक साथ मिलकर काम करने से बड़ी से बड़ी बाधाओं में भी रास्ता निकल आता है, यानी काम आसान हो जाता है। साहसी व्यक्ति सभी बाधाओं पर आसानी से विजय पा लेता है क्योंकि एकता और संगठन में शक्ति होती है जिसके बल पर वह पर्वत और सागर को भी पार कर लेता है।

प्रश्न 3. गीत में सीने और बाँहों को फ़ौलादी क्यों कहा गया है?

उत्तर-

सीने और बाँह को फ़ौलादी इसलिए कहा गया है क्योंकि हमारे इरादे मजबूत हैं। हमारे बाजुओं में आपार शक्ति है। हम ताकतवर हैं। हम बलवान हैं। हमारी बाँहें फ़ौलादी इसलिए भी हैं कि इसमें असीम कार्य क्षमता का पता चलता है। हमारी बाजुएँ काफ़ी शक्तिशाली भी हैं।

गीत से आगे

प्रश्न 1. अपने आसपास तुम किसे साथी मानते हो और क्यों ? इससे मिलते-जुलते कुछ और शब्द खोजकर लिखो।

उत्तर-

हमारे माता-पिता, भाई-बहन, मित्र, सहपाठी, शिक्षक, पड़ोसी-ये सभी हमारे साथी हैं। क्योंकि ये सब हमें किसी न किसी रूप में सहयोग करते हैं। साथी से मिलते-जुलते शब्द हैं-सहायक, सखा, संगी, सहचर, शुभचिंतक, मित्र, मीत आदि।

egyanarchive

प्रश्न 2. 'अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक कक्षा, मोहल्ले और गाँव/शहर के किस-किस तरह के साथियों के बीच तुम्हें इस वाक्य की सच्चाई महसूस होती है। और कैसे?

उत्तर-

कुछ बातों के संबंध में हम अपने साथियों से जुड़े होते हैं। इन मामलों में हमारी सोच एक होती है और हमारे सुख-दुख की अनुभूति भी एक होती है। उदाहरण के लिए। पानी-बिजली की कमी, ट्रैफिक जैसी रोजमर्रा की मुश्किलों से जब हमारा सामना होता है तो हमें लगता है जैसे हमारा दुख एक है। वहीं दूसरी ओर विद्यालय के लिए पदक जीतना, कक्षा में अच्छे अंक लाना और बड़े होकर कुछ बनने की चाह से पता चलता है कि हमारा सुख भी एक ही है।

प्रश्न 3. इस गीत को तुम किस माहौल में गुनगुना सकते हो?

उत्तर-

इस गीत को स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस या किसी संगठन की स्थापना के अवसर पर गा सकते हैं। खेल के मैदान में भी यह गीत खिलाड़ियों में जोश पैदा कर सकता है। वैसे तो यह गीत कभी-भी गुनगुनाया जा सकता है, पर विशेषकर जब सहयोग और संगठन की शक्ति बतानी हो तब यह गीत महत्त्व रखता है।

प्रश्न 4. 'एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना'-

1. तुम अपने घर में इस बात का ध्यान कैसे रख सकते हो?
2. पापा के काम और माँ के काम क्या-क्या हैं?
3. क्या वे एक-दूसरे का हाथ बँटाते हैं?

उत्तर-

अपने घर के छोटे-बड़े कामों में माता-पिता का हाथ बँटा कर हम इस बात की। ध्यान रख सकते हैं।

पापा और माँ को बहुत से काम करने होते हैं। जहाँ एक ओर पापा कार्यालय जाते हैं और घर के लिए आवश्यक बाहरी कामों का ध्यान रखते हैं वहीं माँ घर की सफाई, खाना बनाना, कपड़े धोना, हम सबों को पढ़ाना, खरीदारी करना और कई छोटे-बड़े कामों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है।

हाँ, वे इन कामों से एक-दूसरे का हाथ बँटाते हैं।

प्रश्न 5. यदि तुमने 'नया दौर' फ़िल्म देखी है तो बताओ कि यह गीत फ़िल्म में कहानी के किस मोड़ पर आता है? यदि तुमने फ़िल्म नहीं देखी है तो फ़िल्म देखो और बताओ।

उत्तर-

'नया दौर' फिल्म में जब कच्ची सड़क को पक्का करने के लिए सब मिल जुल कर काम करते हैं तब यह गीत आता है। यह गीत उनके सहयोग, उत्साह और जोश को प्रदर्शित करता है।

egyanarchive

कहावतों की दुनिया

प्रश्न 1.

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं।

(क) ऊपर लिखी कहावतों का अर्थ गीत की किन पंक्तियों से मिलता-जुलता है?

(ख) इन दोनों कहावतों का अर्थ कहावत-कोश में देखकर समझो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

उत्तर-

(क) एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।

एक से मिले तो कतरा, बन जाता जाता है दरिया
एक से एक मिले तो ज़र्रा, बन जाती है सेहरी
एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत
एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत।

(ख) • अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता– भले ही तुम बलवान और बहादुर हो, पर अकेले दुश्मनों का सामना नहीं कर सकते। तुम्हें पता है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।

• एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं– अगर हम मिलकर युद्ध करें तो हमारी विजय निश्चित है। आखिर एक और एक ग्यारह होते हैं।

प्रश्न 2. नीचे हाथ से संबंधित कुछ मुहावरे दिए गए हैं। इनके अर्थ समझो और प्रत्येक मुहावरे से वाक्य बनाओ-

1. हाथ को हाथ न सूझना
2. हाथ साफ़ करना
3. हाथ-पैर फूलना
4. हाथों-हाथ लेना।
5. हाथ लगना।

उत्तर-

1. बिजली चली जाने के बाद इतना अँधेरा हो गया कि हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था।
2. मौका मिलते ही चोर ने गहनों पर अपना हाथ साफ कर दिया।
3. पुलिस को देख कर चोर के हाथ-पैर फूल गए।
4. नई किताब के बाजार में आते ही सब ने उसे हाथों-हाथ लिया।
5. तुम नहीं जान सकते कि कितने इंतजार के बाद यह इनाम राशि मेरे हाथ लगी

egyanarchive

भाषा की बात

प्रश्न 1.

हाथ और हस्त एक ही शब्द के दो रूप हैं। नीचे दिए गए शब्दों में हस्त और हाथ छिपे हैं। शब्दों को पढ़कर बताओ कि हाथों का इनमें क्या काम है-

हाथघड़ी, हथौड़ा, हस्तशिल्प, हस्तक्षेप, निहत्था, हथकंडा, हस्ताक्षर, हथकरघा

उत्तर -

1. हाथघड़ी- हाथघड़ी हाथ की कलाई पर पहनी जाती है।
2. हथौड़ा- एक ऐसा लोहे का औज़ार है जिसे हाथ से पकड़कर चलाया जाता है।
3. हस्तशिल्प- इस शिल्पकारी को हाथ (हस्त) से किया जाता है।
4. हस्तक्षेप- बीच-बचाव करने के लिए। इसका अर्थ है दखल देना।
5. निहत्था- जिसके हाथ में कोई हथियार न हो, उसे निहत्था कहते हैं।
6. हथकंडा- किसी कार्य को पूरा करने के लिए अनुचित तरीका अपनाने को हथकंडा कहते हैं। इसमें भी हाथ का कार्य नहीं है।
7. हस्ताक्षर- हाथ से अपना नाम लिखकर किसी कार्य हेतु स्वीकृति देना।
8. हथकरघा- हाथ से किए जाने वाले छोटे-मोटे उद्योग धंधे, जैसे चरखा चलाना, कपड़ा बुनना, टोकरी बुनना आदि।

प्रश्न 2. इस गीत में परबत, सीस, रस्ता, इंसाँ शब्दों के प्रयोग हुए हैं। इन शब्दों के प्रचलित रूप लिखो।

उत्तर -

1. परबत – पहाड़, पर्वत
2. सीस – शीश, सिर, माथा
3. रस्ता – रास्ता
4. इंसाँ – इंसान, मनुष्य

प्रश्न 3. "कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना"-

इस वाक्य को गीतकार इस प्रकार कहना चाहता है

(तुमने) कल गैरों की खातिर (मेहनत) की, आज (तुम) अपनी खातिर करना।

इस वाक्य में 'तुम' कर्ता है जो गीत की पंक्ति में छंद बनाए रखने के लिए हटा दिया गया है। उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द 'अपनी' का प्रयोग कर्ता 'तुम' के लिए हो रहा है, इसलिए यह सर्वनाम है। ऐसे सर्वनाम जो अपने आप के बारे में बताएँ निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। (निज का अर्थ 'अपना' होता है।)

निजवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार होते हैं जो नीचे दिए वाक्यों में रेखांकित हैं-

मैं अपने आप (या आप) घर चली जाऊँगी।

बब्बन अपना काम खुद करता है।

सुधा ने अपने लिए कुछ नहीं खरीदा।

अब तुम भी निजवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित रूपों का वाक्यों में प्रयोग करो।

अपने को

अपने से

egyanarchive

अपना

अपने पर

अपने लिए

आपस में

उत्तर-

1. अपने को- हमें अपने को दुश्मन से बचाना है।
2. अपने पर- मुझे अपने पर भरोसा है।
3. अपने से- अपने से बड़े व्यक्तियों की बात मानना चाहिए।
4. अपने लिए- हमें अपने लिए कुछ वक्त निकलना चाहिए।
5. अपना- आप इसे अपना ही समझिए।
6. आपस में- आपस में झगड़े मत करो।

कुछ करने को

प्रश्न 1. बातचीत करते समय हमारी बातें, हाथ की हरकत से प्रभावशाली होकर दूसरे तक पहुँचती हैं। हाथ की हरकत से या हाथ के इशारे से भी कुछ कहा जा सकता है।

नीचे लिखे हाथ के इशारे किन अवसरों पर प्रयोग होते हैं? लिखो-

'क्यों' पूछते हाथ

मना करते हाथ

समझाते हाथ

बुलाते हाथ

आरोप लगाते हाथ

चेतावनी देते हाथ

जोश दिखाते हाथ

उत्तर-

1. 'क्यों' पूछते हाथ' - इसका प्रयोग हम किसी से प्रश्न करते समय करते हैं।
2. 'मना करते हाथ' - किसी की बात को मना करने के लिए किया गया हाथों का प्रयोग।
3. बुलाते हाथ - किसी को बुलाने के लिए किया गया हाथों का प्रयोग।
4. आरोप लगाते हाथ - किसी पर दोष मढ़ते समय हाथ की उँगली का इशारा।
5. जोश दिखाते हाथ - जोश दिखाने के लिए दोनों हाथों का इशारा करते हैं।
6. समझाते हाथ - हम हाथ के संकेत से समझाते हैं।
7. चेतावनी देते हाथ - किसी काम के परिणाम के विषय में आगाह करते समय।

egyanarchive